नागार्जुन के काव्य की अन्तर्वस्तु

डॉ0 विवेक सिंह
प्रवक्ता–हिन्दी
डायट, भदोही, उ.प्र

'बाबा' नाम से पुकारे जाने वाले प्रगतिशील जनकवि नागार्जुन (मूल नाम श्री वैद्यनाथ मिश्र) आजादी से पूर्व से रचनाकर्म में संलग्न हैं। उन्होंने काव्य रचना के साथ–साथ उपन्यास भी लिखे हैं। नागार्जुन यायावर हैं, घुमक्कड़ हैं– उन्होंने लगभग सारा देश घूमा है। इसलिए उनका प्रकृति चित्रण भी उनके अपने अनुभवों पर आधारित है जैसे ''बादल को घिरते देखा है' कविता में वे हिमालय पर्वत पर फिरते हुए बादलों का ही चित्रण नहीं करते बल्कि हिमालय की घाटी की वनस्पति, वहाँ के लोगों के व्योरे भी देते चलते हैं। किसी भी राजनीतिक विचारधारा का हूबहू अनुकरण न करते हुए भी उनकी प्रतिबद्धता व्यापक रूप से मार्क्सवादी विचारधारा से है क्योंकि यह विचारधारा वर्गाधारित समाज में उनका पक्ष लेती है, जो शोषित हैं। इसलिए नागार्जुन ने राजनीतिक कविताओं में सत्ताधारी, शोषण में लिप्त एवं अपने लाभ के लिए गरीबों का खून चूसने वाले नेताओं को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है। चरमराती सामंती व्यवस्था के अवशेष– जमींदार, सामंत, बड़े–बड़े ताल्लुकेदार एवं नवाब भी उनके व्यंग्य का निशाना बने हैं। नागार्जुन की ऐतिहासिक चेतना, सामाजिक यथार्थ को परखने की दृष्टि बहुत पैनी है। वे किसानों, मजदूरों का पक्ष तो लेते हैं किन्तु उनके जीवन के अन्तर्विरोधों को भी नजरअंदाज नहीं करते। सामाजिक अन्तर्विरोधों को उघाड़ती उनकी कविवताओं में मध्यवर्ग एवं बुद्धिजीवी वर्ग भी शामिल हैं। नागार्जुन ने भारतीय नेताओं एवं अन्तर्राष्ट्रीय नेताओं तथा अपने मित्रों को भी अपनी कविताओं में याद किया है। इसके अलावा प्रकृति पर नागार्जुन ने कविताएँ लिखी हैं। प्रकृति में बादल एवं वर्षा बहुत प्रिय है क्योंकि बादल ही किसान के जीवन की आंस हैं। पत्नी, पुत्र, मित्र अर्थात निजी सम्बन्धों पर भी उन्होंने लिखा है।

जनकवि नागार्जुन के काव्य की अन्तर्दृष्टि का दायरा बहुत बड़ा है। भारतीय जनजीवन में आजादी से पहले से लेकर आज तक जो कुछ भी घटा है– वह सब नागार्जुन की कविता में कैद है। सैकड़ों बर्बर गोलीकाण्ड, शोषण, हिंसा, राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक दुराचार– सब नागार्जुन की वर्गचेतन दृष्टि का निशाना बने हैं। एक ओर तो उन्होंने ऐसी राजनीतिक कविताएँ लिखी हैं जिन्हें तात्कालिक घटना पर आधारित कविताएँ कहा जा सकता है। दूसरी ओर संघर्षशील

मनुष्य की सुख–दुःख गाथा पर अपेक्षतया गंभीर कविताएँ हैं। नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं में और सामंतों, पूँजीपतियों, भ्रष्ट बुद्धिजीवियों पर लिखी हुई कविताओं में व्यंग्य की जो पैनी मार है– वे उन्हें अग्रज व्यंग्यकारों की श्रेणी में ला खड़ा करती हैं।

नागार्जुन में सामंती व्यवस्था के उत्पीड़न, वैभव प्रदर्शन, पतन को अभिव्यक्त करने वाली कई कविताएँ लिखी हैं निराला पर लिखी एक कविता में उन्होंने निराला की ही दो पंक्तियाँ उद्धृत की हैं–

''खुला भेद विजयी कहाए हुए जो

लहू दूसरों का पिए जा रहे है।''

यही दो पंक्तियाँ नागार्जुन काव्य की भावात्मक नींव है। पूरा नागार्जुन काव्य 'विजयी कहाये हुओ' का भेद खोलता है। नागार्जुन की ऐतिहासिक चेतना और दृष्टि बहुत स्पष्ट और खरी है। जब–जब भी और जहाँ कहीं भी जनता का शोषण होता है नागार्जुन उसकी खिलाफत ही नहीं करते, अपितु अपना पक्ष जनता के साथ जाहिर करते हैं। 'विजयी के वंशधर' शीर्षक कविता इसका स्पष्ट उदाहरण है।

नागार्जुन की एक और कविता है–तालाब की मछलियाँ– जिसके माध्यम से वे नारी की दासता का बहुत ही मार्मिक वर्णन करते हुए सामंती व्यवस्था की सड़ांध भरी सच्चाइयों का पर्दाफाश करते हैं। कोसी की बाढ़ ने पोखर का मिण्डा तोड़ दिया है पोखर का पानी कोसी की पानी में जा मिला है अचानक बांध टूट जाने से ये मछलियाँ कोसी के विराट जल में व्याकुल हो गयी हैं। मिथिला वासी पोखर की मछलियों पर टूट पड़े हैं। फिर मछलियाँ जमींदार के अन्तःपुर में एवं अधेड़ मथुरा पाठक की हवेली में पहुँचती हैं जहाँ पाठक की 18 वर्षीय तीसरी पत्नी उन्हें तलने बैठती है। कड़ाही में तल रही मछलियाँ पाठक जी की पत्नी से कहती हैं–

''हम मछली, तुम भी मछली

दोनों ही उपभोग वस्तु हैं''

इसके बाद नारी दासता का पूरा इतिहास है। मछलियाँ मुक्त हो गयीं किन्तु नारी अभी भी गुलाम है। मछलियाँ कहती हैं–

बहुत दिनों पर

पाई हमने छूट

मचने दो यदि मची हुई है हत्या और लूट

वन्या के प्लावन से सहसा पुष्पकरिणी की

परिधि गई है टूट।

यह संक्रांति का समय है। मुक्ति से ठीक पहले की उथलपुथल है। इसी तरह नागार्जुन सामंती व्यवस्था का अपनी कविता में भेद खोलते हैं।

नागार्जुन ने यदि जीवन की ठोस विसंगतियों का सीधा सच्चा चित्रण किया है तो दूसरी ओर जीवन के अन्तर्विरोधों को भी अभिव्यक्ति दी है। उनकी कविता–शालवनों के निविड टापू में''– राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन के अनेक अन्तर्विरोधों को खोलती है। कविता के इस पंक्ति का– ''जा चुका गहरे निविड़ अरण्य की अतल

झील के अन्तर''– एक–एक शब्द कवि को इस समाज से उसकी दूरी, अजनबीपन का तीव्र एहसास करा देता है। कवि को लगता है वातावरण में एक कृत्रिम सुगंध फैली है अध्यापक जैसे लोग इस सुगंध से विह्वल है किन्तु कवि संज्ञाशून्य हो गया है। उसे चिन्ता है कि भाव व इन्द्रियबोध के धरातल पर भी हमारा व्यवसायीकरण किया जा रहा है। एक कृत्रिम सौन्दर्य की अभिरुचि धीरे–धीरे सभी पर हावी होती जा रही है। नयी पीढ़ी का सांस्कृतिक पतन हो रहा है। बाद की अपनी कविता में उन्होंने प्रमुख रूप से राजनीतिक घटनाओं को अपनी कविता का विषय बनाया है।

नागार्जुन की राजनीतिक व्यंग्य की कविताएँ आजाद भारत के राजनीतिक जीवन की लगभग पूर्ण अभिव्यक्ति है। यदि कविता वास्तव में समकालीन जीवन में कोई प्रत्यक्ष भूमिका अदा करती है तो नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं ने यह काम बखूबी किया है। दूसरी बात यह कि यदि कविता की कोई तात्कालिक भूमिका होती है तो हिन्दी कविता में उसी तरह की होगी जिस तरह की भूमिका नागार्जुन की कविता निभाती है। मायकोव्स्की का कहना था कि कविता नाटक घरों व स्टेडियम में गूंजनी चाहिए। रेडियों में लगातार फूटनी चाहिए अखबारों की सुर्खियाँ बननी चाहिए, पर्चों, पोस्टरों, मिठाई के डिब्बों पर मौजूद रहनी चाहिए। नागार्जुन ने कविता को इस योग्य बनाया कि मायकोव्स्की की यह इच्छा पूरी की जा सके। उन्होंने बार–बार अपने को जनकवि कहा है। उनकी कविता को बहुतों ने जनसभाओं में सुना है, उनकी कई काव्यपंक्तियाँ नारा बन चुकी हैं। इससे बड़ी बात यह कि उनकी कविता बहुत आसानी से जनता की जुबान पर चढ़ जाती है। नागार्जुन की राजनीतिक कविताएँ दो प्रकार की हैं–

1. सरकार एवं शोषण तंत्र के तमाम भागीदारों के खिलाफ लिखी गयी कविताएँ।
2. मेहनतकश संघर्षरत जनता और उसके संघर्षों के पक्ष में।

शोषण तंत्र के खिलाफ लिखी गयी अपनी राजनीतिक कविताओं में नागार्जुन शोषण समर्थक चरित्रों के लिए अक्सर जानवरों के बिम्बों का प्रयोग करते हैं। नागार्जुन ने शासन के ऐसे जनप्रतिनिधियों का व्यंग्य चित्र नौटंकी की परिचित धुन व शब्दावली में खींचा है–

श्वेत श्याम तसार, तरनार, अंखिया निहार के

सिण्डकेटी प्रभुओं के पगधूर झार के

लौटें हैं दिल्ली से कल टिकट मार के

खिले हैं दानें ज्यूं अनार के

आए दिन बहार के

नागार्जुन ने राजनीतिक घटनाओं, व्यक्तियों पर इस तरह से लिखा है मानों वे व्यक्ति ही कोई जीवन प्रसंग हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारत के अनेक नेता उनके काव्य एलबम है। में अनेक मुद्राओं में मौजूद है। टीटो और हुआ और रजनी पामदत्त को भी नहीं

छोड़ा। नागार्जुन को जहाँ कहीं भी शक हुआ कि इस नेता की छवि जनता के हक में नहीं जा रही है– वे तुरन्त उसके खिलाफ खड़े हो गए।

नागार्जुन की तमाम राजनैतिक कविताएँ किसी विशेष विचारधारा के आधार पर नहीं बल्कि बहुत ही जबरदस्त कामनसेंस पर आधारित हैं। ऐसे नही है कि वे किसी विचारधारा पर विश्वास नहीं करते हैं बल्कि उन्हें तो मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित प्रगतिशील कवि कहा जा सकता है। किन्तु वे विचारधारा में बद्ध नही हैं। इसलिए अनेकों बार उनकी राजनीतिक दृष्टि साफ नहीं रही है। ''तुम रह जाते दस साल और'' कविता में उनकी सहानुभूति ऐसे लोगों के साथ भी है जो घोर प्रतिक्रियावादी हैं।

नागार्जुन ने बहुत बड़ी संख्या में मेहनतकश लोगों की तबाह जिंदगी और उनके राजनीतिक संघर्षों पर कविताएँ लिखी है जहाँ कहीं भी जनता शोषण, हिंसा का प्रतिकार करती हैं वे पूरे मन से उसे समर्थन देते हैं चाहे वह सन् 1948 का तेलंगाना विद्रोह हो, नक्सलवादी आन्दोलन हो, एमरजेंसी से मुक्त होने के लिए जनता का संघर्ष का छटपटाहट हो। विदेशी जनता के प्रति भी उनकी सहानुभूति रही है। जूलियन रोजनवर्ग का संघर्ष, नेपाली जनता का संघर्ष– नागार्जुन इनके साथ रहे हैं। नागार्जुन का यह साधारण सा सिद्धान्त रहा है–दुश्मनों के लिए घृणा दोस्तों से प्यार। जनता उनकी दोस्त है। जनता के शोषक उनके दुश्मन।

नागार्जुन की आशाओं का प्राण केन्द्र है जनता–जनता में इतने गहरे विश्वास के कारण ही नागार्जुन सर्वहारा का। शोषण में पिसती हुई जनता की मुक्ति का स्वप्न देखते हैं। जनता की अदम्य शक्ति में उनका पूरा विश्वास है। जनता कष्ट में है फिर भी उसका जो चित्र उनमें मिलता है वह उदात्त है। जनता अपनी पूरी गरिमा के साथ उनके काव्य में मौजूद है। 'शासन की बन्दूक' नामक कविता में सत्ता द्वारा किए जा रहे दमन का आतंक वो है ही किन्तु जनता और जनता के अदम्य साहस की अभिव्यक्ति भी है।

नागार्जुन की निजी जीवन प्रसंगों पर भी अनेक कविताएँ लिखी हैं जैसे 'सिन्दूर तिलकित भाल', 'प्रत्यावर्तन'–दोनों कविताएँ पति–पत्नी सम्बन्धों को लेकर लिखी गयी है। पत्नी प्रेम एवं गृहस्थ जीवन के आंतरिक सौन्दर्य की अद्भुत ढंग से अभिव्यक्ति हुई है। वर्षों तक पत्नी और गृहस्थी की चिंता न करने से उत्पन्न ग्लानि व पश्चाताप, घर की याद व स्थिर शांत जीवन की रक्षा इन दोनों कविताओं में पूरी शक्ति से अभिव्यक्त हुई है।

1– तभी तो तुम याद आती प्राण
हो गया हूँ नहीं पाषाण
याद आतें स्वजन
जिनकी स्नेह से भीगी अमृतमय आंख
स्मृति विहंगम की कभी थकने न देगी पांख

(सिंदूर तिलकित भाल)

2– आज तेरी गोद में यह शीश रखकर

क्या बताऊँ मैं कि जो विश्राम पाया

(प्रत्यावर्तन)

एक कविता है– 'क्या अजीब नेचर पाया है।'' यह कविता एक युवती की आंतरिक उदासी, अकेलेपन से लड़ने की कोशिश को बहुत ही गहराई से व्यक्त करती है। 'आओ प्रियं आओ' में मित्र के प्रति प्रेम की उत्कट अभिव्यक्ति हुई है। मित्र से बोलचाल बन्द है और नागार्जुन उदास है।

नागार्जुन ने बहुत सारी कविताएँ प्रकृति पर विशेष कर बादलों व वर्षा पर लिखी है। बादल उन्हें पागल कर देते है। उनकी एक बहुत प्रसिद्ध कविता है– 'बादल को घिरते देखा है' जिसमें हिमालय, हिमालय की घाटी का वर्णन और बादलों के आने व बरसने का स्वाभाविक वर्णन है। यह वर्णन काल्पनिक न होकर अनुभव पर आधारित है।

तुंग हिमालय के कंधों पर
छोडी बड़ी कई झीलें हैं–
उनके श्यामल नील सलिल में
समतल देशों से आ–आ कर
पावन की उमस से आकुल
तिक्त मधुर विसतन्तु खोजते
हंसों को तिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

प्रकृति इनकी रचनाओं में अपने सारे रंगों व मुद्राओं के साथ आई है। प्रकृति के साधारण असाधारण रूप उनके यहाँ है उसका सौन्दर्य व कुरूपता दोनों ही उन्हें प्रिय है। पावस तो बहुत प्रिय है।

नागार्जुन की कविता के अनेकों काव्य रूप हैं जिससे यह जानना कठिन हो जाता है कि उनके शिल्प की केन्द्रीय प्रकृति कौन सी है। व्यंग्य की तेजधार उनकी राजनीतिक कविताओं के शिल्प की प्रमुख विशेषता है। नामवर सिंह नागार्जुन के व्यंग्य को देखकर उन्हें कबीर के बाद हिन्दी का सबसे बड़ा व्यंग्यकार मानते हैं। नागार्जुन के व्यंग्य को उनका आत्म व्यंग्य अधिक विश्वसनीय बनाता है। नागार्जुन जितने निर्मम अपने प्रति हैं उससे किसी भी तरह कम निर्मम औरों के प्रति नही हैं।

नागार्जुन के यहाँ गीत भी मिलेंगे छंदों में लिखी कविताएँ भी, विभिन्न शैलियों में किए गये अनेकों प्रयोग भी। वस्तुतः नागार्जुन के कविता का कोई एक काव्य रूप नहीं है। छंद बद्ध कविता में कभी तो पूरी कविता में एक ही छंद, लय मिल जायेगी कभी एक ही कविता में छंद बदल जायेगा किन्तु ये सारे काव्यरूप कविता को पाठक, जनसमुदाय, तक सम्प्रेषित करने के लिए, अर्थ को उन तक सारगर्भित ढंग से पहुँचाने के लिए ही नागार्जुन इस्तेमाल करते हैं।

नागार्जुन की काव्य भाषा भी वैविध्य पूर्ण है। अरुण कमल के शब्दों में– ''नागार्जुन को पढ़ने का अर्थ है हिन्दी भाषा

के वास्तविक जगत में लौटना, हिन्दी के निजी स्वरूप एवं संस्कारों से परिचित होना। भाषा के इतने रूप, बोलियों के इतने मिक्सचर उनकी कविताओं में मिलते हैं कि यदि उनके काव्य के अन्य प्रसंगों को छोड़ भी दें तो सिर्फ अपनी भाषा के लिए वे हमेशा–हमेशा के लिए महत्वपूर्ण बने रहेंगे। शब्दों को वे इस तरह फेरते हैं जैसे ताश के पत्ते। फंटकर कही से काट लिया।''

(आलोचना अंक 55–56 पृ028)

उनकी भाषा लचीली और समावेशी है। उसके तल में बोलियों की सहस्रधारा का अर्न्तप्रवाह मौजूद है। वह निरन्तर विस्तृत एवं समृद्ध होती भाषा है। डॉ0 रामविलास शर्मा ने बहुत ही सटीक शब्दों में नागार्जुन की काव्य भाषा की विशेषताओं को एक ही पंक्ति में बहुत संक्षेप में बता दिया– ''हिन्दी भाषा प्रदेश के किसान व मजदूर जिस तरह की भाषा आसानी से समझते और बोलते हैं उसका निखरा हुआ काव्यमय रूप नागार्जुन के यहाँ है। भारतेन्दु पर लिखी कविता में नागार्जुन ने स्वयं स्पष्ट कर दिया है। 'हिन्दी की है असली रीढ़ गंवारू बोली।' वस्तुतः नागार्जुन की कविता हमें जीवन एवं जगत के प्रति एक नये दृष्टिकोण से परिचित कराती है। कवि की दृष्टि सामाजिक यथार्थ पर केन्द्रित रहती है– लेकिन उसे बदलने और बेहतर बनाने की कामना के साथ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 रामविलास शर्मा – प्रगतिशील काव्यधारा और नागार्जुन।
2. डॉ0 अजय तिवारी – नागार्जुन और उनकी कविता।
3. आधुनिक साहित्यिक निबन्ध– डॉ0 त्रिभुवन सिंह।
4. आलोचना अंक 55 पु0 26
5. आलोचना अंक 56 पृष्ठ 28